

Work sheet- 1 May-2019

Hindi (Grammar)

Grade: 10

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

दुख, थकान और स्नायविक तनाव का एक कारण है-सांसारिक जीवन में महत्वपूर्ण एवं लाभप्रद बातों के अलावा अन्य बातों में रुचि न लेना। इसका परिणाम यह होता है कि सचेतन मस्तिष्क कुछ विशिष्ट मामलों से विश्राम नहीं ले पाता और ये विशिष्ट मामले संभवतः उसकी चिंताओं, परेशानियों को बढ़ाते चलते हैं। निद्रा की स्थिति को छोड़कर सचेतन मस्तिष्क कभी खाली नहीं रह पाता, जबकि अचेतन का विचार धीरे-धीरे परिपक्व होता रहता है। परिणाम होता है- व्यक्तित्व का हास, उत्तेजना, अदूरदर्शिता, चिड़चिड़ापन और संतुलनबोध का हास, ये सभी थकान के कारण और परिणाम दोनों ही हैं। अधिक उद्विग्न होने से मनुष्य की बाह्य अभिरुचियाँ भी मंद पड़ने लगती हैं। उनके मंद पड़ जाने पर उनसे प्राप्त राहत भी कम होने लगती है और मनुष्य और अधिक उद्विग्न होने लगता है। इस दोषपूर्ण चक्र की समाप्ति प्रायः एक विघटन के रूप में होती है। निर्णय करना तथा संकल्पशक्ति का उपयोग करना अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य है। विशेषकर, यदि इन्हें शीघ्रतापूर्वक और अवचेतन की सहायता के बिना पूरा करना हो। जो लोग ऐसे महत्वपूर्ण विषयों पर कोई महत्वपूर्ण निर्णय करने के पूर्व 'सो जाना' पसंद करते हैं, वे वस्तुतः ठीक करते हैं, केवल निद्रा वस्था में ही अवचेतन की मानसिक प्रक्रियाएँ गतिशील हो सकती हैं। कार्य

पूरा हो जाने पर जो मनुष्य उस कार्य को भूल जाये और दूसरे दिन प्रारंभ होने पर उसे स्मरण न रखें, वह उस अन्य व्यक्ति की अपेक्षा अपना कार्य अधिक सुचारु रूप से कर लेगा, जो हमेशा अपने कार्य की ही चिंता करता है ।

क) दुख, थकान और स्नायविक तनाव का मुख्य कारण क्या है ?

ख) थकान के मुख्य परिणाम क्या हैं ?

ग) बाह्य अभिरुचियाँ कब मंद पड़ने लगती हैं ?

घ) अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य क्या है ?

ड.) थकान की भाव वाचक संज्ञा क्या है ?
